BA-I
Paper-I
Unite-5

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J College Rajnagar
Madhubani L.N.M.U Darbhanga
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com.

Jain: Theory of Syadvada (Lecture-II)

(जैन दर्शन: स्याद्वाद सिद्धान्त) (व्याख्यान-II)

कल के व्याख्यान में स्याद्वाद सिद्धान्त में बतलाया था कि स्याद्वाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है। स्याद् शब्द से यह ज्ञात होता है कि किसी वस्तु के सन्दर्भ में हमारा परामर्श एवं दृष्टिकोण विशेष पर आधारित है दूसरे दृष्टिकोण से वह गलत भी हो सकता है। वस्तु अनन्तधर्मात्मक होती है। अनन्त गुणों का ज्ञान साधारण मनुष्यों के द्वारा संभव नहीं है।

जैन दार्शनिक अपने मत को दोषरहित सिद्ध करने के लिए प्रत्येक 'नय' के आरंभ में स्यात शब्द जोड़ने का निर्देश देता है। जैसे अन्धे हाथी के स्वरूप की व्याख्या करते समय कहते हैं कि "स्यात हाथी खंभे के समान है", तो उसका मत दोषरहित होता है। ऐसी परिस्थिति में सभी अन्धों की बातें अपने अपने ढंग से सत्य होती, साथ ही पूर्णता की दृष्टिकोण से यथार्थ होती। इसे ही 'स्याद्वाद' कहा जाता है। अतः स्याद्वाद वह सिद्धान्त है जो मानता है कि मनुष्य का ज्ञान एकांगी तथा आंशिक सत्य है।

Scanned with CamScanner

जगत को एकांगी तथा आंशिक मानने के कारण जैन दर्शन परामर्श के सात प्रकार मानते हैं। जैन दर्शन के इस वर्गीकरण को 'सप्त-भंगी नय' कहा जाता है। ये अधोलिखित हैं—

(i) स्यात अस्ति – यह भावात्मक परामर्श है। जैसे स्यात दीवाल लाल है। इसका अर्थ यह है कि किसी विशेष देश-काल परिस्थिति में दीवाल लाल है।

(ii) स्यात नास्ति :– यह अभावात्मक परामर्श है। जब हम कहते हैं कि स्यात टेबुल इस कोठरी मे नहीं है। यहाँ स्यात शब्द यह बोध कराता है कि किसी विशेष रूप रंग का टेबुल, किसी विशेष समय में इस कोठरी में नहीं है। इस प्रकार से स्यात शब्द यह परामर्श करता है कि विशेष रूप रंग का टेबुल का परामर्श हुआ है वह टेबुल इस कोठरी में नहीं है।

(iii) स्यात अस्ति च नास्ति च :→ इस नय में दृष्टिभेद से घड़े का विधान और निषेध दोनो है। जैसे स्यात घड़ा है भी और नहीं भी है। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी विशेष परिस्थिति देश काल में घड़ा की उपस्थिति है एवं अन्य परिस्थिति देश काल में घड़ा की उपस्थिति नहीं है।

Scanned with CamScanner

(iv) स्यात् अवक्तव्यम् :- जैन दार्शनिकों के अनुसार किसी वस्तु में अस्ति, नास्ति, उभय के अतिरिक्त एक अन्य कोटी भी है वह अवक्तव्यता की है। इसका तात्पर्य है कि किसी घड़े में अपने रूप की उपस्थिति एवं अन्य रूप की अनुपस्थिति एक साथ होती है, परन्तु इसे व्यक्त नहीं कर पाते हैं। इसका प्रयोग अनिश्चितता की स्थिति में किया जाता है। इस प्रकार तीसरा परामर्श विरोध की स्थिति में मौन का निर्देशन करता है।

(v) स्यात् अस्ति च अवक्तव्यम् च :→ यह परामर्श पहले और तीसरे परामर्श को मिलाने से बनता है। इस नय में वस्तु की सत्ता एवं उसकी अनिर्वचनीयता दोनों को स्वीकार किया जाता है। जैसे- स्यात् घड़ा है और अवक्तव्य भी है। इस नय का अर्थ है घड़े की स्वरूप रूप मिट्टी को देखें तो घड़ा है। किन्तु इसके स्वरूप और परिवर्तनशील रूप, दोनों को एक साथ में देखें तो वह अस्तित्ववान होने पर भी अवर्णनीय है।

(vi) स्यात् नास्ति च अवक्तव्य च :- यह परामर्श दूसरे और तीसरे परामर्श के मिलाने से बनता है। यह नय वस्तु की असत्ता (वस्तु क्या नहीं है) और उसकी अनिर्वचनीयता दोनों को स्वीकार करता है।

Scanned with CamScanner

(vii) स्यात् अस्ति च नास्ति च अव्यक्तव्य च :- यह नय तृतीय और चतुर्थ दोनों को मिलाने से बनता है। जैसे - स्यात् घड़ा है नहीं है और अवक्तव्य है। जैसे घड़ा मृत्तिका की दृष्टि से है। और रूप क्षण क्षण परिवर्तन की दृष्टि से नहीं है। इन दोनों दृष्टियों को एक साथ व्यक्त करने पर अवक्तव्य है। इस नय में द्रव्य और पर्यायों के एक साथ होने और अलग-अलग होने के कारण घड़े के अस्तित्व, अनस्तित्व और अव्यक्तव्य को सूचित किया जाता है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वस्तु के सन्दर्भ में जो ज्ञान प्राप्त होता है वह एकांगी एवं आंशिक है। वस्तु के सन्दर्भ में जो ज्ञान एक दृष्टिकोण से सत्य है वह दूसरे दृष्टिकोण से असत्य भी हो सकता है। स्याद्वाद सिद्धान्त इसी पर बल देता है। यह ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है।

Scanned with CamScanner